International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1100-1102

स्वामी विवेकानन्द के नारी शिक्षा से सम्बंधित शैक्षिक विचार

डॉ. संतोष यादव
(शोधछात्रा) वरिष्ठ प्रवक्ता, बबा खेतानाथ टी. टी. कॉलेज, बहरोड, अलवर राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

महान हिन्दू संन्यासी स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी, सन् 1863 ई. में कलकत्ते के एक प्रमुख दत्त परविार में हुआ था। इनका बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ तथा परिवार में सभी इन्हें 'नरेन' कहकर पुकारते थे। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत्त बंग्ला के साथ साथ अंग्रेजी तथा फारसी के उद्भट विद्वान थे। वे इतने उदार तथा दानी थे कि दूसरों के अपराधों को क्षमा कर देते थे तथा अभाव में पड़े हुए व्यक्तियों को धन से सहायता करते थे। स्वामी विवेकानन्द की माँ भुवनेष्वरी देवी धार्मिक प्रवृति की थीं तथा उन्हें रामायण एवं महाभारत कंठाग्र थे। आचरण की पवित्रता तथा ईष्वर भक्ति के संयोग से उनका व्यक्ति दीपक सतत् प्रज्ज्वलित रहता था। बालक नरेन को अपनी देवी स्वरुपा विदुषी माता के चरणों में बैठकर महाभारत तथा रामायण की प्रेरक कथाओं को सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा का अर्थ

वस्तुतः स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा का अर्थ स्पष्ट करने के लिए कभी भी उसकी परिभाषा नहीं की। एक बार उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा था– ''मैं किसी बात की कभी परिभाषा नहीं करता हूँ। फिर भी शिक्षा की व्याख्या शक्ति के विकास के रुप में की जा सकती हैं'' स्वामीजी के अनुसार मानव में कुछ शक्तियाँ विद्यमान रहती है। शिक्षा उनकी इन्हीं शक्तियों का विकास है। व्यक्ति के अन्दर उपस्थित गुणों का विकास करना ही तो वास्तविक शिक्षा हैं। स्वामीजी ने शिक्षा का उद्देश्य निर्धारित करते हुए शिक्षा की सबसे अच्छी परिभाषा की – ''शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए– मनुष्य में अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति। '' उनके ये शब्द आज भी शिक्षाशास्त्रियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बने हुए हैं यह पूर्णता बाहर से नहीं आती है, वरन् मनुष्य के भीतर छिपी रहती है। सब प्रकार का ज्ञान मनुष्य की आत्मा में निहित रहता है। शिक्षा उसका एवं परिष्कार मात्र करती हैं। शिक्षा मानव को मानवीय गुणों से सम्पन्न करती है। शिक्षा के द्वारा ही मानव में देवत्व के गुणों का विकास होता है।

विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

1. **आन्तरिक शक्तियों का विकास** – स्वामीजी ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि मानव के अन्दर सभी प्रकार की शक्तियाँ जन्मजात होती हैं। शिक्षा उस क्षमता भंडार का द्वार खोल देती है। अतः शिक्षा की सार्थकता मानव के आंतरिक गुणों के विकास, प्रस्फुटन एवं परिष्कार में है।
2. **मानव निर्माण** – शिक्षा का सबसे महान उद्देश्य है, मानव का सम्यक्–स्वाभाविक निर्माण। वह शिक्षा ही क्या जिसको पाने के उपरांत इन्सान हैवान बन जाए। वस्तुतः सबल, सक्षम, सुविकसित तथा प्रबुद्ध मानव का निर्माण ही तो शिक्षा का मूल उद्देश्य हो सकता
3. **चरित्र निर्माण** – चरित्रहीन मानव में आत्मा नहीं होती, वह निष्प्राण होता है। कहा भी है – यदि धन गया तो कुछ नहीं गया। चरित्र से निर्भीकता, दृढ़ निश्चय तथा मानसिक शक्ति का विकास होता है। चरित्र ही मनुष्य को वैयक्तिय विशिष्टता प्रदान करता है। अतः चरित्र निर्माण शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य हैं।
4. **इच्छा शक्ति का विकास** – यह सर्वविदित है कि मानव एक मांस पिण्ड मात्र नहीं है। केवल शारीरिक शक्ति का मनुष्य के जीवन में कोई विशेष मूल्य नहीं है। जहाँ तक शारीरिक विशालता एवं शक्ति का संबंध है, पशु मानव से कहीं अधिक बढ़ चढ़कर है। अतः स्वामीजी ने कहा कि शिक्षा का परम उद्देश्य है इच्छा है इच्छा शक्ति का विकास।
5. **विशिष्ट ज्ञान** – यह सही है कि ज्ञान के विकास से हम अपनी दृष्टि को विशाल कर पाते हैं। इससे आत्मशक्ति भी प्राप्त होती है। किन्तु मात्र उस ज्ञान का उतना बड़ा मूल्य नहीं होता जो केवल रोटी पैदा करने में सहायक हो। हमें तो उस ज्ञान की उतनी ही बड़ी आवश्यकता है, जिसके सहारे हम सत्य का अनुभव करते हैं, विश्व की एकता की अनुभुति करते हैं, विश्वबंधुत्व की भावना का विकास करते हैं तथा शाश्वत सत्य का दर्शन करते हैं। शिक्षा का लक्ष्य इस ज्ञान की प्राप्ति भी है।
6. **विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान का विकास**– विज्ञान की उपलब्धियों एवं उसकी प्रगति के साथ अपने को संबंध करना आधुनिक जीवन के लिए अत्यावश्यक हो गया है। आधुनिक सुख के तथा निर्माण के साधन की प्राप्ति भी तो विज्ञान एवं तकनीकी ज्ञान से ही सम्भव है। अतएव आधुनिक शिक्षा का उद्देश्य विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान का विकास भी है।
7. **मानवीय गुणों का विकास**– मानव शरीर में यदि मानवीय गुणों का विकास न हुआ तो वह पशुवत् है। मानवीय गुणों में विशिष्ट है आत्मविश्वास का गुण। इसके बिना मानव किसी काम के करने में असमर्थ होता है। इसके बिना नेतृत्वशक्ति का अंकुरण ही नहीं हो सकता। जिसमें आत्मशक्ति ही नहीं, वह नेतृत्व क्या कर सकेगा। उदारता, ममता, निर्भीकता, निष्पक्षता, निर्णयशक्ति आदि ऐसे गुण हैं जिनको पाकर ही मानवता सार्थक होती हैं। अन्याय के सम्मुख जो नहीं झुका, वही सही अर्थों में शिक्षित हैं। अतएव इन गुणों के विकास में ही शिक्षा की सार्थकता है।
8. **विचारशक्ति का विकास** – विचारशक्ति का वरदान ही मानव को पशु से उच्चतर स्थान प्रदान करता है। विचारशक्ति के द्वारा ही मानव अच्छे बुरे, ऊँचे नीचे, सहयोग असहयोग तथा न्याय अन्याय में अतंर कर सकने में समर्थ हो पाता है। विचार शक्ति की ताली से ही हम अपनी जीवनगत समस्याओं का

समाधान ढूँढने में सक्षम होते हैं। कहना तो यह होगा कि विचार का ही विकसित रुप विवेक हैं। विचार तथा विवेक के संगम पर ही तो वास्तविक मानवीय शिक्षा का प्रकाश स्तंभ खड़ा होता है।

विवेकानन्द द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के तत्व

(क) ज्ञान मनुष्य में स्वभाव सिद्ध है– वस्तुतः मनुष्य में कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं आता। वह तो उसके अन्दर ही मूल रुप में स्थित होता है। शिक्षा के द्वारा तो उस शक्ति का अनावरण होता है, प्रस्फुटन तथा विकास होता है। इसीलिए तो स्वामीजी ने कहा भी है– मनुष्य को अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्ति प्रदान करना ही वास्तविक शिक्षा है।

(ख) बच्चे स्वंय अपने को सिखाते हैं– वस्तुतः हम में से प्रत्येक अपने आपके सिखाने का कार्य करता है। बाहर के गुरु तो केवल सुझाव देते है, प्रेरणा प्रदान करते हैं। वे तो अंतस्थ गुरु को मात्र उद्‌बोधन प्रदान करते है। विषय अथवा ज्ञान हमारे अनुभव तथा विचारशक्ति द्वारा स्पष्ट से स्पष्टतर होते जाते हैं। सच तो यह है कि उनकी अनुभूति हम अपनी आत्मा में करने लगते हैं। वटवृक्ष के नन्हें बीज से विशाल वृक्ष उत्पन्न होता है। माली तो मात्र उसे अनुकूल मिट्‌टी, हवा पानी अथवा बाह्य पोषण देता है। बढ़ने, फैलने तथा फलने का कार्य तो वह बीज स्वयं करता है। इसी प्रकार बच्चे भी स्वंय सीखते हैं। गुरु तो मात्र उद्‌बोधन तथा अनुकूल वातावरण उपस्थित करता है।

(ग) स्वतन्त्र अवसर – आज बच्चों को ठोक पीट कर तथा उस पर अनावश्यक दबाव डालकर हम शिक्षित करना चाहते हैं। यह न केवल अन्याय है, बल्कि अमानवीय भी है। इस प्रकार शिक्षा प्रदान भी नहीं की जा सकती। माता पिता के अनुचित दबाव बच्चों के स्वाभाविक विकास के शत्रु होते हैं। अतः बच्चों के अन्दर निहित असंख्य प्रवृत्तियों तथा शक्तियों को स्वाभाविक रुप से विकसित होने का स्वतंत्र अवसर प्रदान किया जाए। सही सही शिक्षा है।

(घ) विधायक विचार – बच्चों की समुचित शिक्षा के लिए हमें उनके सामने विधायक विचार रखना चाहिए। उनके सामने कभी भी निषेधात्मक विचार नहीं रखना चाहिए। वह बहुत ही घातक होता है। ऐसा देखा भी जाता है कि जहाँ माता पिता पढ़ने लिखने के लिए सदा अपने बच्चों के पीछे लगे रहते हैं और कहा करते हैं कि तुम कभी कुछ भी नहीं सीख सकते, गधे बने रहोगे। वहाँ बच्चे सचमुच में वैसे ही बन जाते हैं। वस्तुतः बच्चों को आवश्यक उत्साह तथा सहानुभूति प्रदान करने से उनकी उन्नति निश्चित है। यदि हम उनके समक्ष विधायक विचार रखें तो उनमें मनुष्यत्व आएगा और वे अपने पैरों पर खड़ा होना निश्चित रुप से सीख सकेंगे।

(च) स्वाधीनता, विकास की पहली शर्त – वस्तुतः स्वाधीनता ही विकास की पहली शर्त हैं। यदि कोई यह कहने का दुस्साहस करता है। कि मैं इस नारी या इस बच्चे का उद्धार करुँगा, तो वह गलत है, हजार बार गलत है। दूर हट जाओ और देखोगे कि वे अपनी समस्याओं को स्वंय हल कर लेंगे। सच तो यह है हर एक मानव भगवान का ही स्वरुप है। अतः यही समझ और मानवमात्र की सेवा करो। यह सेवा पूजा भाव से होगी तो स्वाधीन वातावरण में बच्चों का पूर्ण विकास सम्भव होगा, वास्तविक शिक्षा का आलोक फैल सकेगा।

विवेकानन्द की दृष्टि में नारी शिक्षा

भारतीय नारियों की दयनीय दशा से स्वामी जी अत्यन्त दुःखी थे। भारत में नारी और पुरूष के बीच व्याप्त अन्तर की आलोचना करते हुए स्वामी जी ने कहा था कि सभी प्राणियों में वही एक आत्मा विद्यमान है, इसलिए नारियों के ऊपर अनुचित नियंत्रण अवांछनीय है। उन्होंने नारी को पुरूष के समकक्ष स्थान देते हुए कहा कि जिस देश में नारी का सम्मान नहीं होता, वह देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। वास्तव में गंभीरता के साथ देखा जाये तो यही ज्ञात होता है कि भारत के पतन और अवनति का एक प्रमुख कारण नारियों की अशिक्षा हैं। इसका अनिवार्य फल यह हुआ कि जो जाति सभी प्राचीन जातियों में श्रेष्ठ थी वही आज पृथ्वी की समस्त जातियों में तुच्छ समझी जाने लगी है। अर्थात् शक्ति पूजा का अविष्कार तथा विवेचना सर्वप्रथम हमारे देश के पूर्वजों ने ही किया था। स्वामी जी का विचार था कि लड़के तथा लड़कियों दोनों को ही पुस्तकीय शिक्षा के अलावा चरित्र की भी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए जिससे समाज में सदाचार का वातावरण सदैव बना रहे। इससे उनके मानसिक बल की वृद्धि होकर बौद्धिक विकास होता है तथा उन्हे अपने पैरों पर खड़े होने की शक्ति भी प्राप्त होती है।

नारी शक्ति की सजीव प्रतिमा है। जहाँ स्त्रियों/नारियों का सम्मान होता है वहां देवता प्रसन्न रहते है और जहां उनका आदर नहीं होता वहां सारे कार्य और प्रयत्न निष्फल हो जाते हैं। जहां तक भारतीय नारी का प्रश्न है ? उसमें सावित्री की भांति सतीत्व होता है जो यमराज से अपने पति को जिन्दा करवा लेती है। वैसे नारियों की किसी भी समस्या का समाधान शिक्षा द्वारा ही हो सकता है। नारियों की शिक्षा का केन्द्र कर्म हो। धार्मिक शिक्षा, चरित्र गढ़न और ब्रहमचर्य पालन इन्ही पर अधिक ध्यान देना चाहिए। भारतीय नारी का आदर्श सीता का चरित्र होना चाहिए। उन्हें त्याग की शिक्षा दी जाए। आधुनिक युग में नारियों को आत्मरक्षा के उपायों को भी सीखना चाहिए। समय आने पर उन्हे आदर्श माता भी बनना चाहिए। शिक्षित और धार्मिक माताओं के ही घ्ज्ञर महापुरूष जन्म लेते है। नारियों की उन्नति से ही संस्कृति, ज्ञान, शक्ति का देश में जागरण हो सकता है।

नारियों को शिक्षा कार्य भी हाथ में लेना चाहिए। स्वामी जी कहते हैं कि सुशिक्षित और चरित्रवती नारियों के द्वारा परिष्कृत शिक्षा दी जा सकती है। ग्रामों और शहरों में शिक्षा केन्द्र खोलकर नारी शिक्षा के प्रचार का प्रयत्न करें। बालिका को इस प्रकार शिक्षा दी जानी चाहिए जिससे उनका चरित्र निर्माण हो, बुद्धि का विकास हो, ब्रहमचर्य का पालन हो और पवित्रता उनकी शिक्षा के प्रमुख अंग हो। स्वामी जी का मानना था कि नारी शिक्षा के पाठ्‌यक्रम में स्वास्थ्य शिक्षा को प्रमुखता से स्थान दिया जाये। उनका मानना था कि स्वास्थ्य के अभाव में नारी शिक्षा ग्रहण करने में असमर्थ हो जायेगी तथा वह अपना योगदान समाज व राष्ट्र के प्रति नहीं कर पायेगी।

हमारे देश में वेदान्त ने यह स्पष्ट घोषणा की है कि सभी प्राणियों में वही एक आत्मा विराजमान है। इस नाते स्त्रियों तथा पुरुषों में किसी प्रकार के भेद की गुंजायश ही नहीं हैं। किन्तु व्यावहारिक रुप से देखा जाता है कि हमारे देश में शिक्षा, समाज तथा जीवन मे अन्य क्षेत्रों में स्त्रियों तथा पुरुषों में बहुत ही भेद बरता जाता है। पुरुषों ने हमेशा से ही स्त्रियों को पीछे ढकेल रखा है। यह स्थिति बड़ी ही भयावह और चिंत्य है।

वस्ततुः आज सभी उन्नत राष्ट्रों ने स्त्रियों को समुचित सम्मान देकर ही महानता प्राप्त की है। देश, जो राष्ट्र स्त्रियों का आदर नहीं करते, वे कभी बड़े नहीं हो सकते। यथार्थ शक्तिपूजक तो वह है, जो स्त्रियों में ईश्वर की शक्ति का प्रकाष देखता है। यह सर्वविदित ही है कि–

'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।

आज स्त्रियों की अनेक अपनी समस्याएँ है। उन समस्याओं के

समाधान का अवसर स्वंय सित्रयों को ही प्रदान करने की आवष्यकता है। स्त्रियों को भी उपयुक्त एवं स्वस्थ, स्वतंत्र वातावरण में शिक्षा देनी चाहिए। धार्मिक शिक्षा, चरित्र गठन तथा ब्रह्मचर्य वर्त का पालन स्त्री शिक्षा के मुख्य अंग होंगे। भारतीय स्त्री जाति के लिए आदर्ष होना चाहिए– 'सीता'। सीता में हम पूर्ण विकसित नारीत्व का साक्षात दर्शन करते हैं। आज हमारी नारी को सीता के गुणों से विभूषित होना है और इन गुणों का स्त्रियों में समावेश ही सच्ची नारी–शिक्षा है।

आज स्त्री शिक्षा मूलाधार होना चाहिए त्याग का गुण। जिसमें त्याग का गुण नहीं आया वह नारी आदर्श नहीं हो सकती। इतना ही नहीं उसमें शारीरिक स्वास्थ्य और आत्मरक्षा की क्षमता का भी पूर्ण विकास होना चाहिए। इसके अतिरिक्त बौद्धिक विषयों के साथ–साथ स्त्रियों में लौकिक दक्षता एवं कुशलता का भी होना आवश्यक हैं। इस प्रकार स्त्री शिक्षा का बड़ा ही उदार स्वरुप स्वमीजी ने उपस्थित किया है।

निष्कर्ष

हमारे राष्ट्र की आत्मा झोपड़ियों में निवास करती है। अतः शिक्षा के दीपक को घर–घर में ले जाना होगा। तभी समस्त जन समुदाय उद्‌बुद्ध हो सकेगा। उन्हें कर्म के साथ–साथ वास्तविक जीवन की भी शिक्षा देनी पड़ेगी। साथ ही साथ शिक्षा मंदिर का द्वार सबके लिए खोलना पड़ेगा तभी भारत में जन समान्य के साथ –साथ नारी शिक्षा का भी विकास और विस्तार हो सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1. पाण्डेय, डॉ. रामशकल : विश्व के महान शिक्षा शास्त्री
2. अवस्थी, डॉ. अमरेश्वर अवस्थी, डॉ. राम कुमार : आधुनिक भारतीय सामजिक–प्रकाशन एवं राजनीतिक चिन्तन, प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार (1961)
3. मालती सारस्वत : भारतीय शिक्षा का विकास और समस्यायें, रस्तोगी, पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ
4. लाल, रमन बिहारी : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी, पब्लिकेशन शिवाजी रोड, मेरठ
5. सुखिया, एस.पी. मेहरोत्रा, आर.एन. : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, रागेय राघव मार्ग, आगरा
6. जायसवाल, डॉ. सीताराम : पाश्चात्य शैक्षिक विचार धारा का तथा भारतीय शिक्षा का विकास
7. चौबे, डॉ. सरजू प्रसाद : भारतीय शिक्षा दर्शन